12

जनजातीय कला

जनजातीय कला का तात्पर्य दृश्य वस्तुओं, उनकी सजावट और नक्काशी से होता है। यह कार्य जनजातीय समूह, स्थानीय देवी-देवताओं, कहानियों और प्रकृति को दिखाने के लिए करते हैं। यहाँ स्थानीय कला का भी प्रयोग होता है। यह कला अधिकतर धातु, लकडी, कपडे, चिकनी मिट्टी अथवा बांस द्वारा प्रदर्शित होती है। जनजातीय समुदाय अपने दैनिक उपयोग की वस्तु, धार्मिक तथा सांस्कृतिक समारोह के लिए खुद प्रारूप (Design) तैयार करते हैं। जनजातीय कला जनजातीय लोगों के कौशल ऊर्जा को दिखाती है। जनजातीय कला भारत के कुछ राज्यों में बहुतायत में है। यह राज्य हैं-मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, ओडिसा, झारखंड, राजस्थान, तेलंगाना, तमिलनाडु, गुजरात और उत्तर पूर्वी राज्य जैसे

चित्र 12.1

असम, अरूणाचल प्रदेश, मिजोरम नागालैंड और त्रिपुरा। जनजातीय समुदाय अधिकतर चित्रकारी, लकड़ी अथवा धातु का कार्य, कला, मिट्टी के बर्तनों और कपडे बुनने के कार्य में लिप्त रहते हैं। जनजातीय कला उन्हें पैतृक रूप से मिली है। यह एक पीढी से दूसरी पीढी में यथावत् रूप से स्थानान्तरित होती रहती है। उदाहरण के लिए-बस्तर का जनजातिय समुदाय लकड़ी-नक्काशी, धातु उत्पाद, टैराकोटा वस्तु और बांस से सजावटी समान बनाने के लिए प्रसिद्ध है। यह जनजाति इसी कला से अपना जीवन यापन करती है। वर्तमान में यह ऐसे स्थानों की तलाश कर रही है जहाँ से यह अपनी कला-उत्पादों के लिए बाजार और प्रदर्शन स्थान की आवश्यकता पूरी कर सके।

उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ को पढने के बाद, आप-

- विभिन्न प्रकार के जनजातीय कला को जान सकेंगे;
- जनजातीय और उनकी कला की सूची बना सकेंगे;
- विभिन्न कला के लिए प्रयुक्त उपकरणों की व्याख्या कर पाएंगे; और
- कला के क्षेत्र में होने वाले विभिन्न प्रारूप और नमूनों की व्याख्या कर पाएंगे।

12.1 जनजातीय कला के प्रकार

आइए भारत के विभिन्न राज्यों में पायी जाने वाली जनजातीय कला के कुछ मूल रूपों की चर्चा करते है। भारत एक विशाल देश है और यहाँ विभिन्न राज्यों में जनजातियाँ निवास करती है। प्रस्तुत पाठ में हम निम्न जनजातीय कला की व्याख्या करेगें :

- मिट्टी के बर्तन और टैराकोटा
- चित्रकारी

- लकड़ी का कार्य
- बांस का कार्य
- धातु का कार्य
- कपडे बुनने का कार्य

1. मिट्टी एवं टैराकोटा

मिट्टी के बर्तन से उपयोगी और सजावटी सामान का रूप हमारे सामने आता है जिसे मिट्टी या चिकनी मिट्टी से बनाया जाता है। यह हाथों से गोल घूमने वाले पहिए पर मिट्टी रखकर बनाया जाता है। जो व्यक्ति अथवा कलाकार भारत में मिट्टी के बर्तन बनाता है, वह कुम्हार कहलाता है। मिट्टी के बर्तन को सही आकृति देने के पश्चात् वह मिट्टी को नियंत्रित तापमान में बर्तन पकाता है। समय के साथ बर्तन लाल रंग के हो जाते है। आपने इनमें से कुछ देखे होगें और उपयोग में भी लिए होगें।

चित्र 12.2 : मिट्टी के बर्तन

- मिट्टी का घडा पानी एकत्रित करने के लिए उपयोगी है।
- सुराही आदि में पानी रखने से गर्मी के मौसम में ठंडा पानी मिलता है।
- पूजा का सामान एवं खिलौने।
- पौधों के लिए गमले जिन्हें घरों में अंदर व बाहर रखा जाता है।
- बर्तन, प्लेट, सकोरा या कटोरी, कुल्हड, जग आदि परोसने के लिए।
- हाथों से रंग किए गए सुंदर व रंगीन चिकनी मिट्टी के सजावटी सामान।
- चिकनी मिट्टी से बना हुक्का एवं पाइप।
- दीवार लटकन, फूलदान, लैम्प और सुंदर जानवरों के चित्र।

विगत कई वर्षो से मिट्टी के बर्तन जैसे तवा, भगोनी, पतीले या कुकर आदि भोजन पकाने के लिए प्रयुक्त होते है। तकनीकी विकास के कारण ''मिट्टी

चित्र 12.3 : टैराकोटा

कूत'' (मिट्‌टी का कूलर) यानि बिना बिजली के ठंडे रेफ्रिजरेटर का भी प्रयोग कई स्थानों पर हो रहा है। मिट्‌टी की हर वस्तु अनोखी होती है क्योंकि एक ही वस्तु एक बार में बनायी जाती है। अभ्यास के साथ-साथ कारीगर का कौशल-विकास होता है। इससे वस्तु सुंदर व समरूप बनती है। यह सस्ते एवं उपयोगी होते हैं। केवल लापरवाही से प्रयोग करके पर आसानी से टूट जाते हैं।

मिट्‌टी के बर्तन के आधुनिक स्वरूप को 'टैराकोटा पॉटरी' कहा जाता है। यह स्वरूप सिंधु घाटी सभ्यता में भी पाया जाता है। कुछ टैराकोटा पॉटरी के टुकडे बेहद सुंदर, कीमती और अच्छे होते हैं। टैराकोटा पॉटरी व मिट्‌टी तेल के लिए उत्तर प्रदेश, हरियाणा, मध्य प्रदेश, तमिलनाडु एवं महाराष्ट्र प्रसिद्ध है। उदाहरण के लिए तमिलनाडु की आयनार समुदाय टैराकोटा कार्य के लिए जाने जाते हैं। यह समुदाय बडे आकार के घोडे एवं हाथी बनाने के लिए प्रसिद्ध है जो कि ईश्वर के वाहन स्वरूप लगते है। मध्य प्रदेश की झाबुआ और बात्रा जनजाति टैराकोटा कला के लिए प्रसिद्ध हैं। यह चिकनी मिट्‌टी के मंदिर बनाते है जिन्हें 'ढामा' कहा जाता है। इसमें एक छोटा दरवाजा होता है जहाँ दीपक के साथ देवी-देवता को रखा जाता है। झाबुआ के जनजातीय लोग टैराकोटा वस्तुओं में रहस्यमीय व जादुई शक्ति का विश्वास करते हैं। असम के आशीर खंडी गांव में भी टैराकोटा कला की अलग शैली है। चिकनी मिट्‌टी के हुक्के राजस्थान के जनजातीय समुदाय बनाते हैं।

2. जनजातीय चित्रकारी

जनजातीय चित्रकारी बेहद सूक्ष्म कार्य है जो कि विभिन्न प्रकार के कागज, कपडे, पत्थर, दीवार और अन्य वस्तुओं पर किया जाता है। यह अधिकतर देवी-देवताओं, पैराणिक और महान कथाओं, मूर्ति कला आदि को प्रदर्शित करती है। यह समुदाय की खुशी और उत्सवों को भी बतलाती है। कुछ प्रसिद्ध जनजातीय चित्रकारी के नाम सारणी 12.1 में दिए गए हैं।

सारणी 12.1 : विभिन्न प्रदेशों की जनजातीय चित्रकारी की सूची

जनजातीय चित्रकारी का नाम	चित्र का प्रकार	जनजातिय का नाम	भारतीय प्रदेशों के नाम
पिथोरा चित्रकारी	रथ	राठवा, मिलाल और नायक	गुजरात और मध्य प्रदेश
फड, वर्ली, पियोरा, चितौरा	लोक कथाऐं	स्थानीय जनजातियाँ	महाराष्ट्र
मिथिला कला/ मधुबनी चित्रकारी	दैनिक जीवन	मिथिला	बिहार
पताचित्र चित्रकारी	भारतीय पौराणिक कथाऐं, भगवान जगन्नाथ	स्थानीय जनजातियाँ	ओडिसा
तंजोर कला	बहादुर प्रकृति की महान कथाऐं	स्थानीय जनजातियाँ	पश्चिम बंगाल, राजस्थान, गुजरात और अन्य क्षेत्र
कलमकारी	पौराणिक देवी-देवताओं की चित्रकारी	स्थानीय जनजातियाँ	आंध्र प्रदेश

कलमकारी कलम के साथ की जाती है जैसा कि नाम से स्पष्ट होता है कलम यानि लेखनी और कारी अर्थात् कला। इमली की टहनियाँ जलाकर एवं लोहे के बुरादे से कलमकारी के चित्र बनते हैं। सब्जियों की डाई (रंग) जैसे जड, फूल,

चित्र 12.4 : जनजातीय चित्रकारी

पत्ते और तने का प्रयोग होता है। कुछ खनिज तत्वों का भी उपयोग होता है। तंजोर चित्रकारी में सुनहरे पत्ते, गहनों में प्रयुक्त होने वाले नग व पत्थर और कांच के टुकडों को सुंदर प्रयोग होता है। पत्ता चित्रकारी में ताड के पत्ते और तुशार मिलन का उचित प्रयोग देखने को मिलता है। वर्ली या मधुबनी चित्रकारी कागज अथवा कपडे पर की जाती है। यह कागज अधिकतर हाथ से बना होता है। कुछ जनजातीय चित्रकारी पत्थरों के टुकडों और दीवार पर की जाती है। जनजातीय कला पौराणिक कथा, देवी और देवताओं, महल के चित्र, हथियार और शास्त्र, विभिन्न प्रकार की मूर्ति कला, टोकरी, घरेलू अथवा रसोई में प्रयुक्त होने वाली वस्तुओं का प्रदर्शन करती है। इसके अलावा देवी सरस्वती, देवी दुर्गा, भगवान शिव, देवी लक्ष्मी, भगवान श्रीकृष्ण, भगवान श्री राम, सूर्य और चंद्रमा के साथ तुलसी पौधा, फूलों के नमूने और ज्यामितीय (Geomatrical) अन्य आकृतियों की भी चित्रकारी की जाती है।

3. लकडी के कार्य

लकडी शायद सबसे पुरानी सामग्री है जिस पर नक्काशी की जाती है। उत्तरी–पूर्वी क्षेत्र में मोनापा, खामती और अन्य जनजातियाँ (विशेषकर अरूणाचल प्रदेश)

चित्र 12.5 लकडी के कार्य

लकडी के कार्य के लिए प्रसिद्ध है। इनका लकडी का कार्य 'कुमिसिंग' कहलाता है। यह चमकदार रंग के साथ याक (पहाडी बैल), हिरण और शेर का चेहरा (मास्क) बनाकर उनसे सजावट करते हैं। ये जनजातियाँ विभिन्न प्रकार से उपयोग में आने वाले बर्तनों का भी प्रयोग करती हैं। मध्य प्रदेश, बिहार और राजस्थान की जनजातियां खिडकियों के कांच, शादी समारोह में उपयोग होने वाले खंभे, तम्बाकू रखने वाले डिब्बे और पाइप के साथ-साथ सजावटी समान बेहद आकर्षक बनाते है। पहाडियों पर रहने के कारण जनजातीय लोग लकडी को विभिन्न रूप से प्रयोग करते हैं। लकडी की नक्काशी साल, टीक और महुआ की लकडी पर की जाती है। साधारण उपकरण जैसे कुल्हाडी, आरी, छैनी व हथौडों का प्रयोग किया जाता है। उपरोक्त चित्र में झारखंड के हिलकटिया जनजाति के आराध्य ईश्वर का चित्र है।

4. बांस के कार्य

असम और उसके आस-पास के उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों की बांस या लकडी का सामान (फर्नीचर) पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है। अधिकतर जनजातीय जनसंख्या लकडी का

चित्र 12.6 : बांस के कार्य

कार्य करती हैं। बस्तर का जनजातीय समुदाय मुख्य रूप से टोकरी बनाने, मेज, चटाई, शिकार के उपकरण, मेज की रोशनी, दीवार लटकन, मछली पकडने के काटों आदि को बनाने में कुशल है। महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र के गौड जनजाति बांस से जुडे हुए कार्य में माहिर है। वह मोटे बांस तथा बांस के टुकडों से लंबे-लंबे टुकडों के रूप में सुंदर कलाकृत्ति बनाते हैं। यह जनजाति तेल अथवा टॉडी का प्रयोग करके बोतलों का भी निर्माण करते है। यह घर व झोंपडी बनाने के लिए भी बांस का प्रयोग करते हैं। सब्जी काटने के लिए तेज धार वाला चाकू, तीर, बाण व धनुष भी तैयार किया जाता है।

5. धातु के कार्य

जनजातीय महिलाऐं एक विशेष प्रकार के गहने पहनती है। वह अपने गले के हार, चूडियाँ, पायल, मांग टीका और अन्य जेवर खुद बनाती हैं। धातु के साथ कांसा, तांबा, चांदी और सोने का भी प्रयोग होता है। अरूणाचल प्रदेश की जनजाति मोम के सांचों से कांसा और सोने के गहने बनाने का हुनर रखते हैं। नागा जनजाति कांच के टुकडे और कौडियों का प्रयोग करके हार बनाते है। साथ ही वह हाथी दांत से चूडियाँ भी बनाने में सक्षम है। छत्तीसगढ के बस्तर क्षेत्र जनजाति के लोग धातुओं से विभिन्न प्रकार की वस्तुऐं जैसे भगवान एवं मानव

चित्र 12.7 : धातु कार्य

आकृति, हाथी, हिरण, बैल, घोडे, लैम्प की रोशनी, हैंगर, डिब्बे और अलग–अलग आकृति व वजन की वस्तुऐं तैयार करते हैं। अंगामी और रैगमा जनजाति के लोग अच्छे लौहार हैं जिन्हें विशेष हथियार जैसे भाले और डाओस (एक प्रकार की चौडी तलवार) बनाने में महारत प्राप्त है। यह लोग धातु से संगीत वाद्य यंत्र और गहने भी बनाते है। बस्तर का धातु कार्य ऊपर नीचे दिए गए चित्र में देख सकते हैं।

6. कपडों के कार्य

टैक्सटाइल का अर्थ है–अलग–अलग उद्देश्यों से कपडों का प्रयोग करना। यह कपडे वस्त्र बनाने और पहनने के काम आते हैं। घरेलू सामान एवं सजावटी सामान में भी कपडों का प्रयोग होता है। जनजातीय लोग भडकीले रंग, सफेद, काला और लाल रंग का प्रयोग मुख्य रूप से अपने कपडों में करते हैं। जनजातीय वस्त्र अपनी विशेष शैली और उनकी कलात्मकता के लिए पहचानी जाती है। उनके वस्त्र और गहने समारोह की जानकारी देते है। छतीसगढ के बस्तर क्षेत्र तथा उडीसा के कोरापुर क्षेत्र के जनजातिय समुदायों में 16वीं शताब्दी से ही

जनजातीय महिलाऐं एक विशेष प्रकार की साडी और पुरुष एक विशेषा पगड़ी तथा अंगरखी पहनते आ रहें हैं जिन्हें आला (सब्जियों की लाल रंग की डाई) से डाई किया जाता है। हर नागा महिला कपडे बनाने के लिए कताई और डाई महत्वपूर्ण कार्य मानती है। ये सूती कपडों का भी प्रयोग करते हैं। यहाँ की कुछ जातियाँ जैसे आओमेलेप, लोहे, सूपांग उनके कपडों से पहचानी जाती हैं। ये अलग–अलग चिन्ह का प्रयोग करते है जिनकी सामाजिक मान्यताऐं होती हैं।

वर्ली एक प्रसिद्ध कला का रूप है जिसे कपडों पर उकेरा जाता है। यह महाराष्ट्र व गुजरात के जनजातीय क्षेत्रों से निकल कर आती है।

क्रियाकलाप 1.1

निम्न सारणी की पूर्ति कीजिए :

जनजातीय कला	**जनजातीय का नाम (एक या अधिक)**	**जनजाति का नाम**	**राज्य का नाम**	**उपकरण प्रयोग**
नमूना	पत्ता चित्र	सौरा	ओडिसा	इमली की पत्ती
मिट्टी एवं टेराकोटा चित्रकारी				
लकडी के कार्य				
बांस के कार्य				
धातु कार्य				
कपडों के कार्य				

पाठगत प्रश्न 12.1

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

1. .... की आयानार समुदाय .... और .... टेराकोटा में बनाने के लिए प्रसिद्ध है।
2. झाबुआ की जनजाती विश्वास करती है कि .... में ईश्वरीय शक्ति है। इसलिए वह मंदिर जो कि चिकनी मिट्टी से बना होता है, को .... कहते हैं।
3. भगवान जगन्नाथ को दर्शाने वाली चित्रकारी को .... कहते हैं।
4. पौराणिक कथाओं को .... चित्रकारी में चित्रित किया जाता है।
5. अरूणाचल प्रदेश की लकडी की नक्काशी में .... और .... जानवरों के चित्र बनाये जाते हैं।
6. राजस्थान की जनजातियाँ लकडी से .... और .... बनाते हैं जिसका प्रयोग घर बनाने में किया जाता है।
7. बस्तर की जनजातियाँ शिकार के उपकरण .... के साथ बनाते है।
8. नागालैंड की .... और .... जनजाति धातुओं से हथियार बनाती है।
9. टैक्सटाइल कपडों में .... डाई का प्रयोग सालों से हो रहा है।
10. उत्तर पूर्वी जनजातिय लोगों की वेशभूषा में ...., ... और .... रंगों का प्रयोग अधिक होता है।

आपने क्या सीखा

भारत की जनजातीय कला संपूर्ण विश्व में प्रसिद्ध है। इसलिए इन्हें अधिक से अधिक जानने और समझके की आवश्यकता है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि भारतीय जनजातीय के लोग मेहनती, समर्पित, कलाकार और प्रकृति के

करीबी होते हैं। अलग-अलग प्रदेशों में अलग-अलग कला प्रसिद्ध है। कुछ कलात्मक कार्य है-मिट्टी के निर्माण, टैराकोटा, चित्रकारी, लकडी के कार्य, धातु कार्य और कपडों के कार्य है। जनजातीय कला, उनके जीवन, उनके ईश्वर, जानवर और समारोह गतिविधियों को दर्शाती है। यह एक पीढी से दूसरी पीढी में स्थातंरित होती है। आपके जनजातियों के अलग-अलग नाम, उनके कार्य, उपकरण, प्रारूप और नमूनों के बारे में अध्ययन किया है। निम्नलिखित जनजातीय कला पर विचार भी किया गया है :

- मिट्टी एवं टैराकोटा
- चित्रकारी
- लकडी के कार्य
- बांस के कार्य
- धातु कार्य
- टैक्सटाइल कार्य

पाठांत प्रश्न

1. मिट्टी एवं टैराकोटा कार्य पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
2. किन्हीं दो राज्यों की जनजातीय कला की सूची बनाइए :

   i. मध्य प्रदेश

   ii. बांस के कार्य

   iii. टैक्सटाइल कार्य

   iv. जनजातीय चित्रकारी

उत्तरमाला

12.1

1. तमिलनाडु, हाथी और घोडा
2. टैराकोटा वस्तुओं, ढामा
3. पत्ता चित्र
4. कलमकारी
5. याक, हिरण एवं शेर
6. खिडकियों के फ्रेम और दरवाजा
7. बांस
8. अनगामी और रैगमा
9. सब्जियों की
10. लाल, काला और सफेद